अध्याय - 3

1.	प्रार्थना

दल के अगुवेः प्रार्थना के साथ दल और चेले बनाने के पाठ्यक्रम को परमेश्वर को समर्पित करें।

2.	आराधना (20 मिनट)	*(परमेश्वर के विशिष्ट गुण)* परमेश्वर शक्तिशाली और महान है

परिभाषा

आराधना क्या है? "आराधना" की परिभाषा है:

आराधना वह अभिव्यक्ति है जो हमारी परमेश्वर के प्रति उपासना, समर्पण और निष्ठा को प्रकट करती है। जो हम अपनी भिन्न प्रकार की प्रार्थनाओं और अपनी प्रति दिन की जीवन शैली से प्रकट करते हैं।

परमेश्वर की आराधना करने के लिए, हमें ज़रूरत है कि हम अपने परमेश्वर को जान लें कि हमारा परमेश्वर कौन है। हर आराधना के समय हम परमेश्वर के केवल एक ही विशिष्ट गुण को जान सकते हैं।

मनन करना

पढ़े या शिक्षा देः परमेश्वर महान और शक्तिशाली है।

पढ़ें - अय्यूब 38:4-5 (पथ्वी) 38:8-11(समुद्र) 38:31-33(तारा मंडल); यशायाह 40:12 (मापना), 25-26 (तारागण)

परमेश्वर लोगों को चुनौती देते हैं कि वे कोशिश करें यह जानने की कि वह कितना महान और शक्तिशाली है। संसार में ऐसा कुछ भी नहीं है जिसके साथ परमेश्वर की महानता की तुलना की जा सके। हिमालय पर्वत और प्रशान्त महा सागर उसके सामने बहुत छोटे हैं। आकाश के सौर मंडल में कुछ भी इतना बड़ा नहीं है जिसके साथ परमेश्वर की महानता की तुलना की जा सके। यहाँ तक कि सूरज भी बहुत छोटा है। तो फिर लोग परमेश्वर की महानता और शक्ति की तुलना किस के साथ कर सकते हैं? लोग ऐसी किसी भी चीज़ के विषय में नहीं जानते हैं जो इतना बड़ा है कि उसकी तुलना परमेश्वर से की जा सके। इस लिए सभी लोग शान्त हैं। तब परमेश्वर लोगों को आमन्त्रित करता है कि ऊपर देखें और इस बात पर ध्यान दें कि किस ने तारे बनाए? और तारों के विषय में कुछ सच्चाईयों के बारे में ध्यान दें।

1. सितारों की गिनतीः

एक साफ और अँधेरी रात के समय आपकी आँखें हज़ारों सितारों को टेलीस्कोप (दूरबीन) के बिना भी देख सकती हैं। इस में से अनेक तारे तो हमारी छायापथ के हैं जिसका नाम आकाश गंगा है। आकाश गंगा में लगभग 100 हज़ार करोड़ सितारे पाए जाते हैं। (100000000000) (11 शून्य)
जो खगोल विशेषज्ञ टेलीस्कोप का प्रयोग करते हैं उनका कहना है कि पूरे ब्रह्मांड में लगभग
10 हज़ार करोड़ खरब तारे पाए जाते हैं। (10000000000000000000000) (22 शून्य) और आकाश में लगभग 100 हज़ार करोड़ छाया पथ पाए जाते हैं। (100000000000) (11शून्य)
आकाश में इतने तारे हैं कि कोई भी मनुष्य अपने जीवन काल में भी उन्हें गिन नहीं सकता है।

2. सितारों की पृथ्वी से दूरीः

हमारे सौर मण्डल में केवल एक ही तारा है और उसका नाम सूरज है। सूरज पृथ्वी से 150 मिलियन किलो

मीटर (150000000) दूर है। यह कितना दूर है? यदि आप किसी हवाई जहाज़ से 1000 किलो मीटर प्रति घंटे की तेज़ी से यात्रा करें आपकोसूरज तक पहुँचने में 17 साल लग जाएँगे।

सितारों और पृथ्वी के बीच की दूरी इतनी अधिक है कि वैज्ञानिक इसे नापने के लिए ज्योति की दर से यात्रा करने की दूरी को नापते हैं। प्रकाश की यात्रा की गति कम से कम 3000,000 कि.मी. प्रति घंटा है। ज्योति गतिशील चीज़ों में सबसे अधिक है जिनको मनुष्य जानता है। इसका अर्थ है कि पृथ्वी के चारों ओर 1 सेकन्ड मे 7 ½ बार एक चक्कर लगा लेती है। एक प्रकाश वर्ष का अर्थ है कि एक साल में प्रकाश किरण कितनी दूर तक पहुँच जाती है और यह दूरी लगभग 9,454 बिलियन कि. मी. है, (9,454,000,000,000) या आधुनिक हवाई जहाज़ की 1 मिलियन सालों की उड़ान के बराबर होगी।

चन्द्रमा हम से 1 1/3 प्रकाश सेकन्ड दूर है। मंगल ग्रह हम से 5 प्रकाश वर्ष दूर है। सूर्य हम से 8 प्रकाश वर्ष दूर है। नक्षत्र प्लूटो हम से 5 प्रकाश वर्ष दूर है पृथ्वी से सबसे नज़दीक तारा 4.3 प्रकाश वर्ष दूर है। आधुनिक हवाई जहाज़ से वहाँ तक पहुँचने में उसे 4½ मिलियन साल लग जाएँगे।

हमारे आकाश मे छाया पथ का नाम आकाश गंगा है। उसका व्यास 120,000 प्रकाश वर्ष है। एक अन्य छाया पथ भी है जिस का नाम स्पायरल नेब्यूला एन.1 है उसमे भी मिलियन से भी अधिक तारे हैं और वह 1 मिलियन प्रकाश वर्ष की दूरी पर है। खगोल विशेषज्ञ का अनुमान है कि सब से दूर जो भी नक्षत्र है वह 17 हज़ार मिलियन प्रकाश वर्ष की दूरी पर है। (1700,000,000) कम करे या बढ़ा लें मनुष्य कभी भी सौर मण्डल पर विजय नहीं पा सकेगा।

<u>3.सितारों के आकार और नापः</u>

हमारे ग्रह “पृथ्वी” का व्यास12,756 किलोमीटर है। सूर्य का व्यास पृथ्वी से 109 गुणा अधिक है। लेकिन ऐसे भी सितारें है जिन का व्यास सूर्य से 100 गुणा या 1000 गुणा अधिक है। इन नापें में उत्कृष्ट ग्रहों के कारण ही हमारा सौर मण्डल इतना बड़ा है कि उसका एक भाग जिसका नाम सूर्य है और बाकी के ग्रह भी जैसे बुद्ध, शुक्र, पृथ्वी और मंगल ग्रह उस भाग के अंदर ही सूर्य के गिर्द चक्कर लगाते रहते हैं।

यदि पृथ्वी का व्यास 1 मिलिमीटर मान कर लिया जाए तो सूर्य का व्यास 11 मिली मीटर होगा और बड़े ग्रहों का व्यास 100 मीटर हो सकता है।

हम सितारो के विषय में बड़े-बड़े टेलिस्कोप के द्वारा जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। लेकिन इन ग्रहों की रचना किस ने की थी जो कि इस संसार की नाम में सबसे बड़ी चीज़ें है? बाइबल हमें बताती है कि वह परमेश्वर ही है जिसने सितारों की सृष्टि की थी। वही इन सब के चलन पर नियन्त्रण रखता है और उसी ने हर सितारे को नाम भी दिया है। यदि मनुष्य उसकी गिनती भी नहीं कर सकता है और न ही उसकी दूरी का और उसके नाप का अनुमान कर सकता है तो वह उस परमेश्वर की महानता को कैसे माप कर समझ सकता है जिस ने उनकी रचना की है? इन अदभुत सितारों का अस्तित्व इस बात की ओर संकेत करता है कि परमेश्वर का अस्तित्व कितना अदभुत और महान है।

आराधनाः परमेश्वर की आराधना उसकी महानता और सामर्थी होने को ध्यान में रख कर करें। उसकी आराधना 2 या 3 लोगों के दल बना कर करें।

3.	**गवाही बाँटना** (20 मिनट)	***[शान्त समय]*** **मत्ती 8:1 - 11:27**

बारी बारी से गवाही बाँटेः या अपने नोट्स में से पढ़ेः सक्षेप में बताएं कि आपने परमेश्वर के साथ दिए गये बाइबल के वचनों से (मत्ती 8:1 – 11:27 से अपने निजि समय में क्या सीखा है।)
हर व्यक्ति की गवाही को ध्यान से सुनें। उसे गम्भीरता से लें और उसे ग्रहण करें। कोई भी व्यक्ति कुछ भी

कहता है उस पर वाद-विवाद न करें।

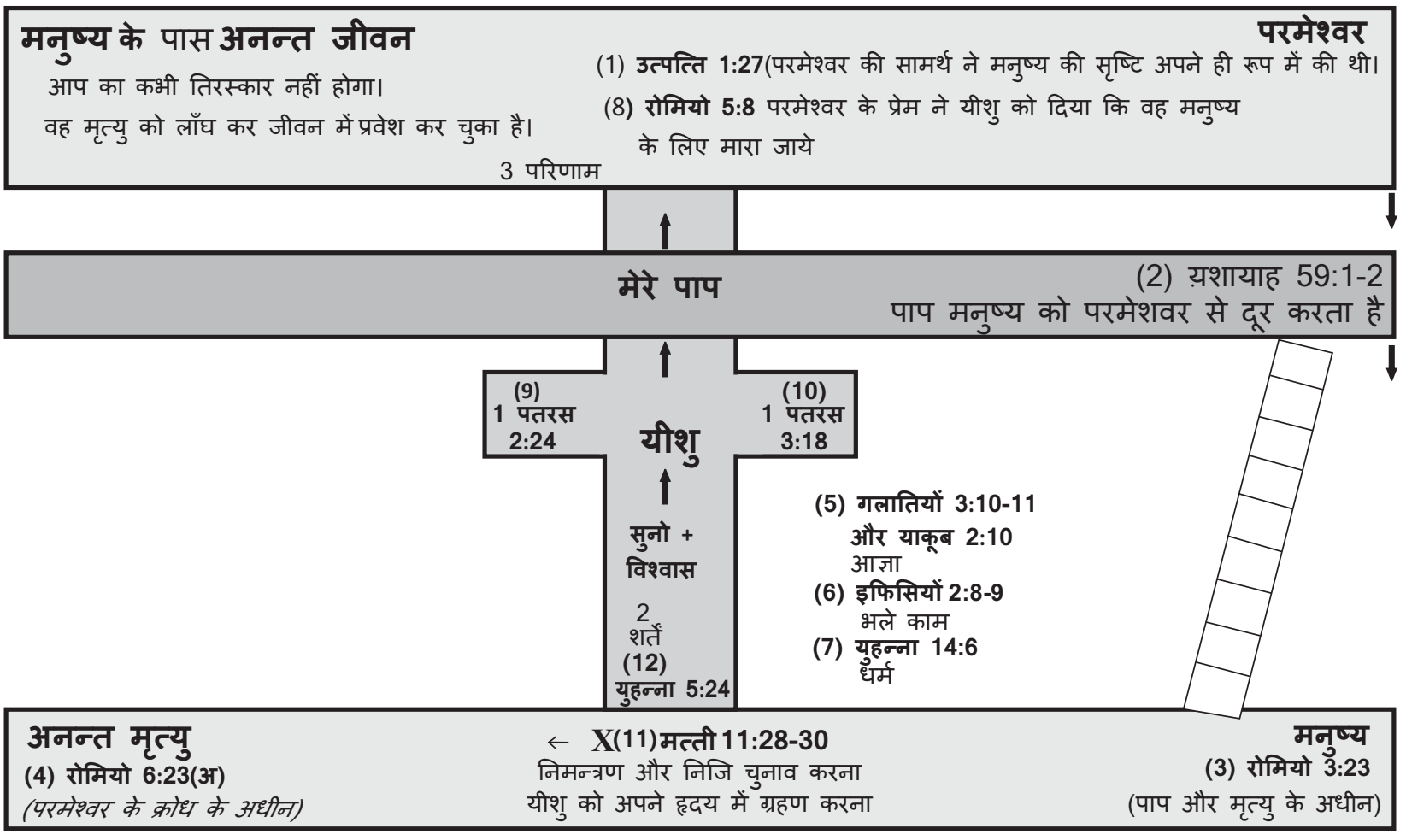
4.	**बाइबल शिक्षा** (70 मिनट)	***सुसमाचार*** **सुसमाचार की धारणा**

जब हम लोगों के साथ सुसमचार को बाँटते हैं तब हमें इस योग्य होना ज़रूरी है कि हम जो शब्द इस्तेमाल करते हैं हमें उनको समझाना आना चाहिए। लोगों की सहायता करें कि वे समझ सकें कि पाप, मृत्यु और और न्याय की धारणा क्या है? क्यों केवल यीशु मसीह ही वह मार्ग है जिसके द्वारा हम परमेश्वर पिता के पास पहुँच सकते हैं? और इसके लिए मसीह पर विश्वास रखने का क्या है अर्थ है?

क.सुसमाचार का संदेश

सुसमाचार का अर्थ है शुभ समाचार, उस महान उपहार के विषय में जो परमेश्वर पिता ने दी है। सुसमाचार का सदेश अनेक तरह से दिया जा सकता है। घोषणा करके, गीत गा कर, नाटक के द्वारा, चित्रों को दिखा कर या फिर उदाहरण दे कर। (नीचे दिए उदाहरण को ध्यान से देखे।)

दल का अगुवा इसे समझाने में सहायता करेगा और इसे सिखाएगा।



परमेश्वर ने मनुष्य की सृष्टि की

(1) उत्पत्ति 1:27 –सब से पहले परमेश्वर ने एक मनुष्य और स्त्री की रचना अपने ही स्वरूप में की थी। इस का अर्थ यह है कि वे परमेश्वर के प्रेम को जानते थे और प्रेम के कारण उससे उनका सम्बन्ध था। वे निष्पाप थे और उनके पास अनन्त जीवन था। फिर परमेश्वर ने उनकी आज्ञाकारिता की परीक्षा की (उत्पत्ति 2:15-17) लेकिन उन्होने आज्ञा को नहीं माना था और उस परीक्षा में फेल हो गए। तब वे पाप में गिर गए। इसलिए परमेश्वर ने उन्हे उस स्वर्ग से बाहर निकाल दिया (अदन वाटिका से जो स्वर्ग के समान थी) और फिर उनको जीवन के पेड़ से भी दूर कर दिया। (उत्पत्ति 3:24)

मनुष्य का पाप में गिरनाः

(2) यशायाह 59:1-2 पाप मनुष्य को परमेश्वर से अलग कर देता है लेकिन वह पवित्र परमेश्वर को पापी मनुष्य को भी अलग कर देता है। यही कारण है कि परमेश्वर उनकी प्रार्थानाओं को नहीं सुनता है और न ही उनको बचाता है। आदम सारे सारे मानव जाति के पापमय हे का प्रतिनिधि है। सारे आदम के वँश के लोग इस पापमय स्वभाव के भागी है और अन्त में मृत्यु के भी भागी हैं। (रोमियो 5:12, 17-19)

(3) रोमियो 3:23 सब ने पाप किया है और परमेश्वर के पवित्र चरित्र और उपस्थिति से रहित हैं।

(4) रोमियो 6:23(अ) हर प्राकृतिक व्यक्ति अब नियमों और मृत्यु के अधीन है (रोमियो 8:2-3) वे परमेश्वर के कोप के अधीन है (रोममियो 1:18) वे पूरी तरह से खोए हुए हैं और अनन्त मृत्यु (अर्थात नरक) की राह पर चल रहे हैं।

मनुष्य का स्वयं को बचाने का प्रयासः लेकिन लोग सोचते हैं कि वे स्वयं को बचा लेंगे। वे विश्वास करते हैं कि नीचे दिए उपायों से वे ऊपर चढ़ कर परमेश्वर के पास पहुँच सकते हैं।

(5) गलातियों 3:10-11 और याकूब 2:10कुछ लोग विश्वास करते हैं कि परमेश्वर उनको बचा लेगा जब वे सारी आज्ञाओं को मान लेते हैं। लेकिन बाइबल का वचन कहता है कि कोई भी सभी आज्ञाओं को नहीं मान सकता है। और कोई भी आज्ञाओं का पालन करने के योग्य नहीं है। (**रोमियो 8:7-8)**

(6) इफिसियों 2:8-9कुछ लोग विश्वास करते हैं कि परमेश्वर उनको बचा लेगा जब वे भले काम करेंगे। लेकिन बाइबल कहती है कोई भी परमेश्वर के सामने अपने भले कामों के लिए परमेश्वर की उपस्थिति में डींगे नही मार सकता है क्योंकि लोग केवल परमेश्वर के अनुग्रह और उनके विश्वास के द्वारा ही बचाए जा सकते हैं।

(7) युहन्ना 14:6 -अन्य लोगों का विश्वास है कि किसी भी अन्य धर्म के अनुसार चलने से उनका सही न्याय होगा। लेकिन यीशु ने कहा, "मार्ग सत्य और जीवन मैं हूँ। कोई भी मेरे बिना पिता के पास नही पहुँच सकता है।" कोई भी धर्म वास्त्विक समस्या से नहीं निबटता है जो कि पाप है। इसलिए परमेश्वर की पवित्रता और धार्मिक्ता निश्चय ही लोगों को सज़ा देगी क्योंकि यह अनिवार्य है। और यह सज़ा अनन्त मृत्यु है यह तभी नहीं मिलेगी जब यीशु मसीह के द्वारा बचा लिए जाते हैं।

परमेश्वर का मनुष्य को बचाने का प्रयासः

(8) रोमियो 5:8 -परमेश्वर का प्रेम ही एकमात्र मार्ग है जो उद्धार को सम्भव करता है। अपने दैविक स्वभाव बिना छोड़े परमेश्वर मनुष्य के स्वभाव को ले लेता है और यीशु मनुष्य के समान बन जाता है। वह अपनी रचित सृष्टि में मानव इतिहास में खोए हुए लोगो के बीच इस पृथ्वीपर वास करता है और इस पृथ्वी पर खोए हुए लोगों के मध्य में रहता है और उनके पापों के लिए वह स्वयं उनके स्थान पर मर जाता है। (युहन्ना 1:1,14,18, फिलिपियों 2:5-8) अपने प्रेम के कारण उसने स्वयं को क्रूस पर बलिदान कर दिया जिससे हमारे पापों की कीमत चुका कर उनके लिए पश्चाताप करके हमें क्षमा प्राप्त करा सके।

(9) 1 पतरस 2:24 क्रूस पर मरने के कारण यीशु मसीह ने परमेश्वर के पवित्र और धार्मिक क्रोध को जो वह हमारे पापों से करता था उसे शान्त कर दिया है। और वह सब कुछ उसने अपने ऊपर ले लिया था।

(10) 1 पतरस 3:18 क्रूस पर मर कर यीशु मसीह ने हमारे पापो के सारे परिणामों को हम से दूर कर दिया है और परमेश्वर से हमारा मेल करा दिया है। यीशु मसीह वह पुल या मार्ग है जिसके द्वारा हम एक बार फिर से परमेश्वर पास पहुँच सकते हैं।

(11) मसीह का निमन्त्रण और मनुष्य का चुनावः

मत्ती 11:28-30 यीशु ने कहा, हे बोझ से दबे लोगो मेरे पास आओ मैं तुम्हें विश्राम दूँगा। यह तो मनुष्य की ज़िम्मेदारी है कि वह सही चुनाव करें।

पाप की समस्या और उसके परिणाम (अलग कर देना) या सदा के लिए हटा देना

(12) युहन्ना 5:24 यीशु ने कहा, "जो कोई मेरे वचन को सुनता है और उस पर विश्वास करता है जिसने मुझे भेजा है

उसके पास अनन्त जीवन है और उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होगी, परन्तु वह मृत्यु को पार करके जीवन में प्रवेश करेगा।" इस की दो शर्ते हैं और तीन परिणाम। हर व्यक्ति जो वचन को सुनता है उसे एक निजि निर्णय लेना होगा कि वह परमेश्वर पर विश्वास करेगा जिसने उस पर स्वयं को यीशु मसीह के रूप में प्रकट किया है। या फिर वह स्वयं को यीशु मसीह से स्वतन्त्र रखे और निरन्तर अनन्त मृत्यु की ओर बढ़ता जाए। (2 थिस 1:8-9) हर विश्वासी के लिए तीन परिणाम निहित हैं, 1.वह तुरन्त अनन्त जीवन प्राप्त कर सकता है, 2, उस पर कभी भी दण्ड की आज्ञा नहीं होगी, और न ही उसे नरक में जाना होगा। 3. वह अनन्त मृत्यु को पार करके अनन्त जीवन के मार्ग पर चल पड़ा है। और यीशु मसीह का वायदा है कि कोई भी उनको उसके हाथ से छीन कर नहीं ले जा सकता है। (युह.10:28)

साराँशः

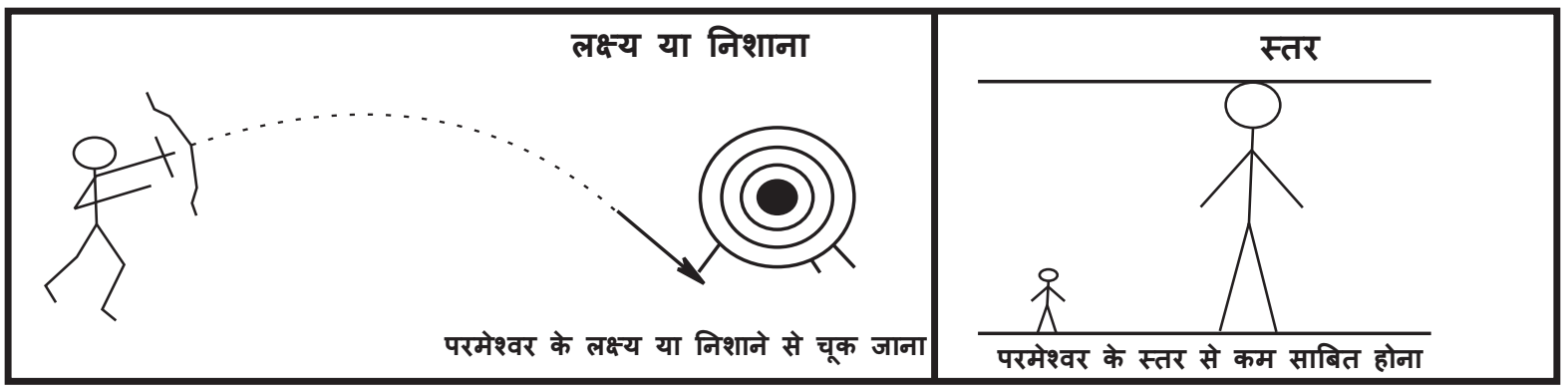
युह. 3:16 बाइबल का निष्कर्श कहता है, "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना इकलौता पुत्र दे दिया, कि जो कोई उस पर विश्वास लाए, नाश न हो वरन अनन्त जीवल पाए।"

ब. बाइबल में पाप शब्द का अर्थ

सुसमाचार कहता है, "सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।" (रोमियो 3:23)

शिक्षा देः भजन 51:1-4 मूल रूप से भाषाएँ जिन शब्दों का प्रयोग करती हैं वे हैं - पाप, अपराध और दुष्टता।

1 पाप शब्द का अर्थ

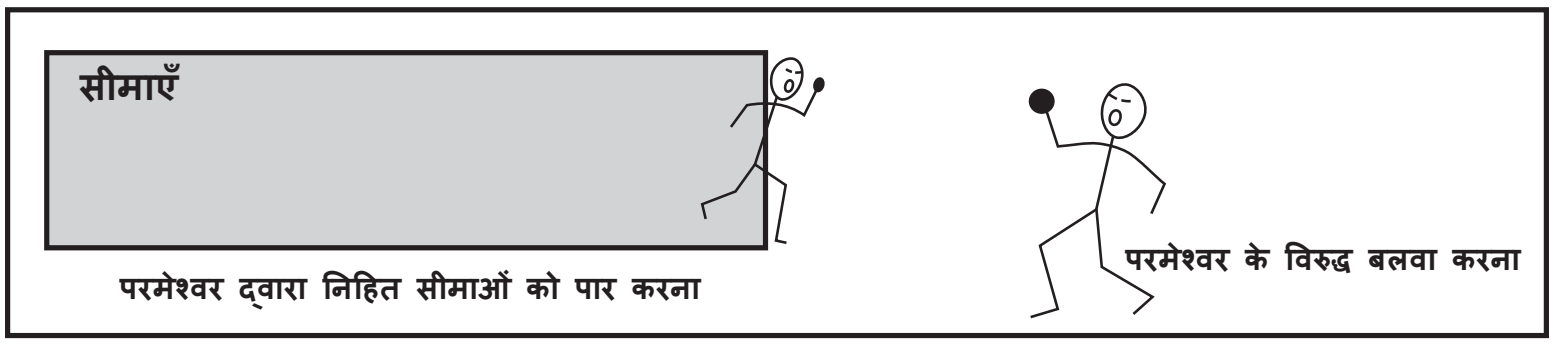


पाप का अर्थ है कि आप अपने जीवन में परमेश्वर के लक्ष्य से चूक गए हैः परमेश्वर का लक्ष्य जो उसने स्वयं को बाइबल के द्वारा प्रकट कर के दिया है वह यह है कि सब लोग जो इस पृथ्वी पर हैं उनको परमेश्वर के साथ एक सही सम्बन्ध बनाने की ज़रूरत है। अन्तिम नतीजा यह होगा कि वे दूसरे लोगों के साथ भी एक सही सम्बन्ध बनाने पाएँगे और केवल वहीं चीज़े करेंगे जो परमेश्वर की नज़रों में सही हैं। एक पापी वही है जो अपने जीवन में परमेश्वर के लक्ष्य तक पहुँचने में चूक जाता है। अर्थात उसका न तो परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध होता है और न ही दूसरे लोगों के साथ।

पाप का अर्थ यह भी है कि परमेश्वर के स्तर से कम साबित होनाः परमेश्वर का सर्वोत्त्म स्तर है, परमेश्वर के साथ सही रीति से रहना और यीशु मसीह में सब कुछ सही करना जैसा यीशु मसीह ने अपनी शिक्षाओं में बताया है। इससे कोई फरक नहीं पड़ता है कि आप कौन सी भाषा बोलते हैं या कौन से धर्म को मानते हैं। आपके कर्म तो परमेश्वर के स्तर से मापे जाते हैं।

लेकिन क्योंकि सभी लोग परमेश्वर के सर्वोच्च स्तर से कम साबित होते हैं वे सभी खोए हुए गिने जाते हैं और उनको एक उद्धारकर्ता की ज़रूरत है। उनको भी जो एक आदर्श जीवन जीते हैं और बहुत से भले काम भी करते हैं। वे भी परमेश्वर के सर्वोत्त्म स्तर से कम पाए जाते हैं। (रोमियो 3:10-12, 23) कोई भी योग्य नहीं है, और कोई भी अपने धर्म के द्वारा नहीं बचाया जा सकता है, न आज्ञाओं का पालन करने से ऐसा हो सकता है और न ही भले कामों से। एक भी भला नहीं है। पाप का केवल यह अर्थ नहीं है कि आपने कोई अपराध किया है, या कुछ दुष्टता की है, इसका अर्थ केवल इतना ही है कि आप परमेश्वर के लक्ष्य से चूक गए हैं और इस लिए उसके सर्वोच्च स्तर से कम पाए गए हैं।

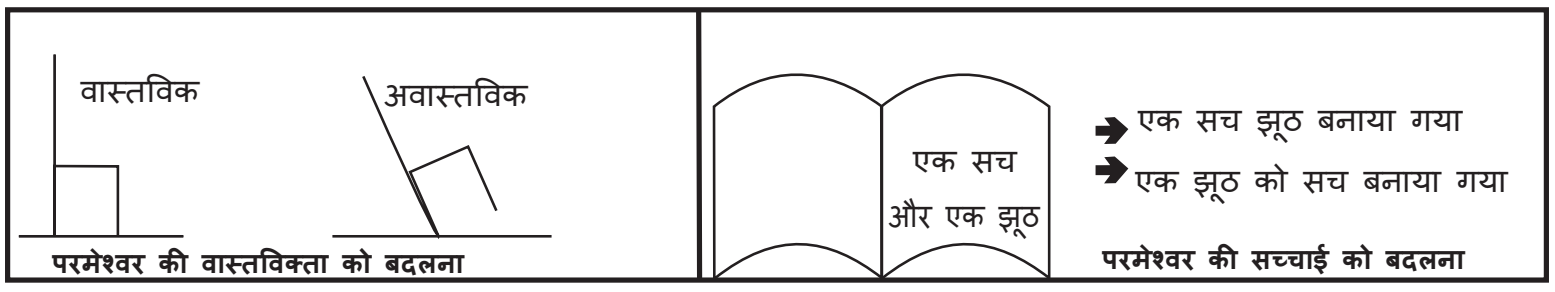
2. अपराध शब्द का अर्थः



अपराध का अर्थ है परमेश्वर द्वारा निहित सीमाओं को लाँगनाः वे सीमाएँ जो परमेश्वर ने मनुष्य के जीवन और उसके व्यवहार के लिए निहित की है उनका प्रकटीकरण परमेश्वर की आज्ञाओं, उसकी शिक्षाओं और उसकी निषेध आज्ञाओं में है जो बाइबल में लिखी हुई हैं। क्योंकि कभी-कभी लोग वह करते हैं जिस के लिएपरमेश्वर मना करता है और कभी-कभी वह परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने के प्रति लापरवाह हो जाते हैं इसलिए वे अपराधी कहलाते हैं। अपराध केवल सामान्य रूप से धार्मिक शिक्षको की आज्ञाओं को न मानना नही है। वरन उन आज्ञाओं को और सीमाओँ को न मानना है जो परमेश्वर ने स्वयं बाइबल में निहित की हैं।

अपराध का अर्थ यह भी है कि जानबूझ कर परमेश्वर के विरुद्ध बलवा करनाः पहले से ही पुराने नियम में लोगों ने परमेश्वर के विरुद्ध बलवा किया था और वह किया जो उनकी नज़रों में सही था। (न्यायियों 21:25) आज लोग जानबूझ कर परमेश्वर के विषय में झूठी बातें फैलाते रहते हैं जिसने स्वयं को बाइबल में प्रकट किया था। वे आज्ञा न मानते हुए परमेश्वर के उस संदेश का तिरस्कार करते हैं जो बाइबल में लिखा है। वे परमेश्वर के उन नैतिक मूल्यों, ज्ञान, चरित्र को ठुकरा देते हैं जो उसने बाइबल में दिए हैं जहाँ पर उसने स्वयं को प्रकट किया है। मनुष्य इस पृथ्वी पर बलवा करके भ्रष्टाचार और अस्वाभाविक दुष्ट आचरण को फैलाता है। वह स्वयं को परमेश्वर और बाइबल के प्रति कठोर बना लेता है। यही बलवा है। अपराध और बलवा दोनों ही प्रकट में गलते कार्य हैंजिन्हें देखा जा सकत है।

3.दुष्टता शब्द का अर्थः



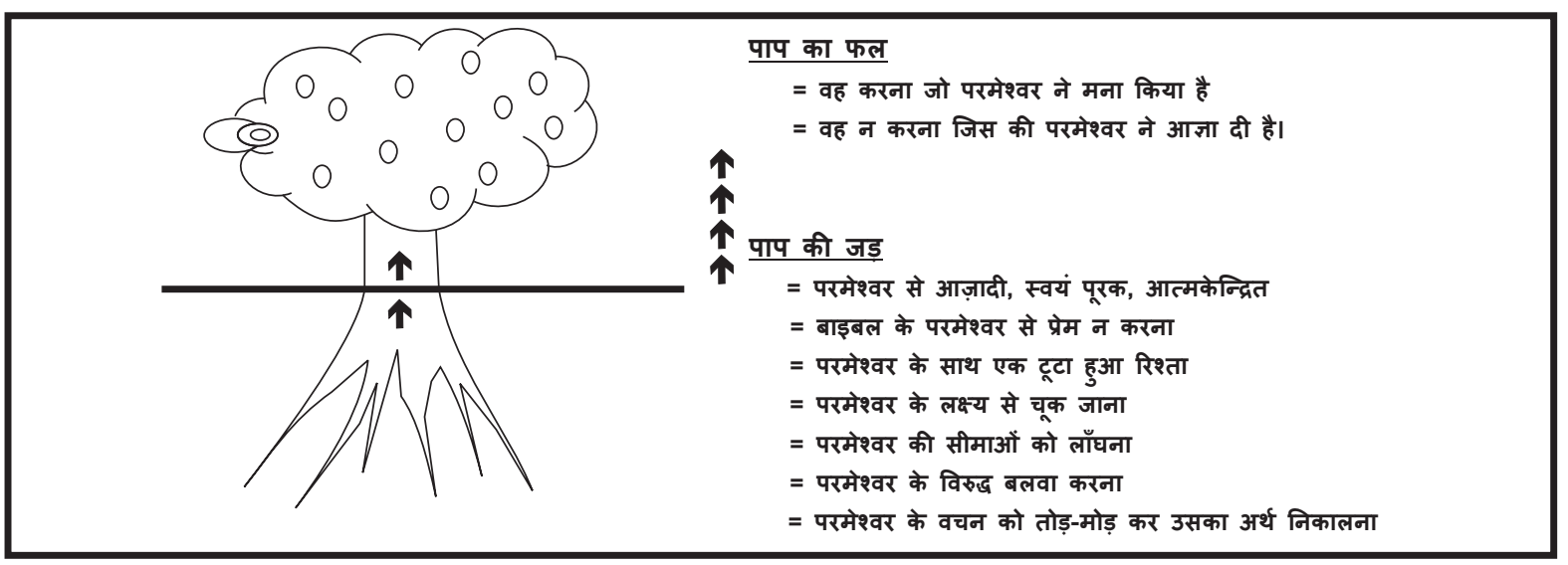
दुष्टता का अर्थ है अचानक से सच्चाई को जैसा परमेश्वर उसे देखता है उसे बदल डालनाःसारे संसार के लोगों की अपनी राय और नज़रिया है। संसार का दृष्टिकोण उस सच्चाई के अस्तित्व को स्वयं अनुभव करना और उसकी सच्चाई और वास्तविक्ता को वे क्या समझते हैं, उसके प्रति उनका व्यवहार कैसा है वे उसे कितना तूल देते हैं और उनका विश्वास और मूल्य कैसा हैं। उनकी सभ्यता और संस्थाएँ कैसी हैं। बाइबल के परमेश्वर ने बाइबल में यीशु मसीह के विषय में सही साँसारिक अवलोकन कर के उसे प्रकट किया है। इस साँसारिक दृष्टिकोण को परमेश्वर की सभ्यता का राज्य कह सकते हैं। परमेश्वर के राज्य के विषय में अनेक मत हैं पर ये मत मसीह और बाइबल के सही दर्शन को प्रकट करते हैं। बाइबल के परमेश्वर चाहते हैं कि सभी लोग परमेश्वर के राज्य की सभ्यता को जान लें। उस पर विश्वास करें और उसी के अनुसार जीवन बिताएँ। लोकिन फिर भी जब लोग आपना दृष्टिकोण बनाते हैं और अपने ही विश्वास और मूल्य बना लेते हैं तब वे परमेश्वर की वास्त्विकता के दृष्टिकोण को बदल देते हैं. यही दुष्टता है।

दुष्टता का अर्थ यह भी है कि हम परमेश्वर की सच्चाई को जो बाइबल में है उसे तोड़-मोड़ कर प्रस्तुत करे

परमेश्वर ने स्पष्ट रूप से सच को बाइबल में प्रकट किया है। लेकिन लोग जानबूझ कर उस सच का गलत

अर्थ निकालते हैं (यशायाह 5:20) अनेक बार लोग बाइबल से वह सब कहलवाना चाहते है जो वे मानना चाहते या कहना चाहते हैं। (2 कुर. 2:17; 4:2) ऐसे में अन्य लोग अनेक बाइबल की सच्चाईयों को जिन को उन्हें मानना चाहिए उन्हें नज़र अन्दाज़ कर देते हैं। (मत्ती 15:6-9, प्रकाशितवाक्य 22:18-19. इसके परिणाम स्वरूप अनेक झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होते हैं और अनेक लोग उन के द्वारा गलत मार्ग पर चले जाते हैं। (मत्ती 24:11) यह भी दुष्टता है। दुष्टता एक बहुत ही चतुर बुद्धि द्वारा लिया गया कदम है जो चोरी से चुपके-चुपके गलत काम करता रहता है। यह एक छुपा हुआ या कहें तो आवरण में छिपा तरीका है जो धर्म के अधीन बहरूपिया बन कर गलत कार्य करता है।

<u>साराँश</u> - <u>पाप का बीज और फल</u>



आत्मकेन्द्रित, आत्मनिर्भर, या स्वतन्त्र होना या स्वार्थी होना और परमेश्वर से आज़ाद होना ही पाप की जड़ है। पाप की जड़ उस परमेश्वर से अलग होने और उससे कोई सम्बन्ध न रखना है, जिसने बाइबल में स्वयं को प्रकट किया है। पाप की जड़ यह भी है कि हम परमेश्वर के लक्ष्य से अलग अपना कोई लक्ष्य निर्धारित कर लेना और अपने स्तर पर उसे प्राप्त करने की कोशिश करें। वह अपने ही नियमों के अनुसार और अपनी निर्धारित सीमाओं में जीना भी है जो उन सीमाओं से अलग है जो परमेश्वर ने निर्धारित की हैं या फिर किसी भी सीमा में नही जीना। अपने लिए एक अपना ही विश्वास और दृष्टिकोण निर्मित करना और उस के अनुसार जीना जिसमें उस परमेश्वर को कोई तूल नहीं देते हैं जिसने स्वयं को बाइबल में प्रकट किया है। हो सकता है कि कोई व्यक्ति ऐसा सोचता हो कि वह कुछ भी गलत नहीं कर रहा है और वह तो सब भले काम कर रहा है, पर वह फिर भी परमेश्वर की नज़रों में पापी गिना जाएगा क्योंकि वह उस एकमात्र सच्चे और जिवित परमेश्वर से अलग जीवन बिता रहा है। पाप की जड़ यह भी है जब एक व्यक्ति वही बनता जा रहा है जो वह बनना चाहता है और वही करता है जो वह करना चाहता है बजाए इसके कि वह बने जो और वही करे जो परमेश्वर चाहते हैं। पाप की जड़ आत्मकेन्द्रित होना और उस परमेश्वर से आज़ाद रहना भी है, जिस ने बाइबल में स्वयं को प्रकट किया है।

जो नहीं करना उसे करना है तथा जो सही है उसे न करना भी पाप का फलः पाप का फल पाप की ज़ड़ से ही निकलता है। पाप का फल यह है कि हम वह करें जिस के लिए परेश्वर ने मना किया है और वह न करें जिसकी आज्ञा परमेश्वर ने दी है। जिन पापों को परमेश्वर ने करने से मना किया है उन पापों की सूची पाई जाती है (मरकुस 7:20-23; रोमियो 1:28-32; गलातियों 5:19-21; तीतुस 3:3; और प्रकाशितवाक्य 21:8 जो आज्ञाएँ परमेश्वर ने दी है उनकी सूची युह. 13:34-35; लूका 6:27-28; कुलु. 3:18-4:1; इब्रानियों 3:12-13; 12:14-17; याकूब 1:27; 1 पतरस 2:11-12

क. बाइबल में मृत्यु का अर्थ

सुसमाचार कहता है, - पाप की मज़दूरी मृत्यु है।(रोमियो 6:23)

शिक्षा दे. शब्द मृत्यु के बाइबल में तीन अर्थ हैं। आत्मिक, भौतिक(साँसारिक) और अनन्त कालीन।

1.आत्मिक मृत्युः

आत्मिक मृत्यु क्या है?

पढ़ेः युह. 8:24; इफि. 2:1-3

नोट्सः आत्मिक मृत्यु वह है जहाँ पर मनुष्य की आत्मा मर जाती है। आत्मिक मृत्यु तब होती है जब आप उस एकमात्र सच्चे और जीवित परमेश्वर से स्वयं को अलग कर लिया है जिसने बाइबल में स्वयं को प्रकट किया है। हर मनुष्य एक जीवित आत्मा है। (उत्पत्ति 2:7)जो स्वयं को व्यक्त करती है एक शरीर में जिसे आप देख सकते हैं और उसमें एक अदृष्य आत्मा जिसे आप अनुभव कर सकते हैं। आत्मा का एक बड़ा कार्य यह है कि उसके पास योग्ता है कि वह परमेश्वर को जान सकती है और उस एकमात्र, सच्चे और जीवित परमेश्वर के साथ संगति कर सकती है।

जब तक लोग पवित्र आत्मा से नया जन्म नहीं लेते हैं तब तक वे आत्मिक रूप से मृत हैं। वे सोचते हैं कि परमेश्वर का कोई अस्तित्व नहीं है। और यदि वे विश्वास करते हैं कि परमेश्वर का अस्तित्व है तो वे मानते हैं कि वह बहुत ऊँचाई पर और बहुत दूर रहता है। वे नहीं जानते हैं कि परमेश्वर बहुत ही निजि है और उन से बहुत ही घनिष्ट सम्बन्ध रखता है, इसीलिए वे कभी भी परमेश्वर के साथ वह घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित कर के उसके साथ संगति नहीं कर पाते हैं।

लेकिन जब वे सुसमाचार को सुनते हैं, और विश्वास करते हैं और वे यीशु को अपने दिल, और जीवन, में ग्रहण कर लेते हैं तब पवित्र आत्मा (परमेश्वर की आत्मा) आ कर उन में वास करती है। (इफि. 1:13; रोमियो 8:9-10) तब पवित्र आत्मा उनकी मानवीय आत्मा को जीवित कर देती है। जिससे वे परमेश्वर को जान पाते हैं और उसके साथ घनिष्ठ संगति करते हैं।

2. शारीरिक मृत्युः

शारीरिक मृत्यु का क्या अर्थ है?

पढेः भजन 49:10, 17; (सभोपदेशक 9:5-6,10; 12:7)

नोटसः शारीरिक मृत्यु मनुष्य के शरीर की वह स्थिति जब उसका शरीर मर जाता। जब मनुष्य की आत्मा उसके शरीर से अलग हो जाती है। और जब एक मनुष्य इस पृथ्वी के जीवन से अलग हो जाता है। यह अलग होना अपने प्रिय परिवार से, मित्रों से, और जो कुछ आपने इस संसार में उपलब्ध किया

3. अनन्त मृत्युः

अनन्त मृत्यु क्या है?

पढ़ेः प्रकाशितवाक्य 21:8 (लूका 16:22-23; मत्ती 10:28; 25:46; प्रकाशितवाक्य 20:14-15; 2 थिसु.1:8-9)

नोट्सः अन्तिम न्याय के दिन से पहले अनन्त मृत्यु का अर्थ है अविश्वासियों की आत्मा में अनन्त दुख (मनुष्य की आत्मा में) जो नरक में होगी। अन्तिम न्याय के दिन के बाद अनन्त मृत्यु का अर्थ है अनन्त काल का दुख और पीड़ा जो आत्मा की (सज़ा) होगी। उस हर अविश्वासी व्यक्ति के शरीर को मिलेगी क्योंकि अब वह सदा के लिए परमेश्वर की उपरस्थिति और देखभाल से दूर हो चुका था।

घ. बाइबल में न्याय शब्द का अर्थ

सुसमाचार कहता है, "जो सुसमाचार पर विश्वास नहीं करता है वह दोषी ठहर चुका है।" (युहन्ना 3:18) और फिर मनुष्य का एक बार मरना निश्चित है और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है। (इब्रानियो 9:27)

शिक्षा दोःबाइबल में न्याय दो भिन्न तरह का होता है, परमेश्वर द्वारा किया गया इस वर्तमान युग का अस्थाई न्याय और भविष्य में होने वाला अन्तिम न्याय। परमेश्वर का आज के युग का न्याय भी दो तरीके से होता है एक जो वर्तमान में अस्थाई रूप से लोगों पर किया जाता है और दूसरा जो कभी कभी वर्तमान में ही स्थाई रूप से कर दिया जाता है।

<u>वर्तमान में परमेश्वर के द्वारा किए गए अस्थाई न्यायः</u>

परमेश्वर क्यों वर्तमान में कुछ न्यायों को अस्थाई रूप से क्यों कर देता है?

पढ़ेः (गलातियों 6:7-8 और रोमियो 1:28-32)

नोट्सः क्योंकि परमेश्वर ने इस पृथ्वी और लोगों की की रचना की है, तो उसे अधिकार भी है कि वह तय करे कि यहाँ पर लोग कैसे जीएँगे। परमेश्वर ने उदाहरण के लिए कुछ भौतिक(सांकारिक) नियम बनाएं हैं उदाहरण के लिए यदि हम गुरुत्वाकर्षन के नियम को भूल जाएँ तो हम बुरी तरह से गिर सकते हैं। उसी रीति से परमेश्वर ने कुछ धार्मिक या आत्मिक नियम भी बनाए हैं। और जब कभी मनुष्य इन नियमों को तोड़ता है तो वह अपने ही पापों के परिणामों को स्वयं भोगता है। "वे जो बोते हैं वही काटते भी हैं।"जो कोई पाप करता है वह पाप की फसल काटता है। उदाहरण के लिए यदि कोई आलसी है तो वह गरीबी की कटनी काटेगा। जो व्यक्ति नफरत का बीज बोएगा, वह टूटे रिश्ते ही काटेगा। एक व्यक्ति जो अत्याचार और ज़ुल्म बोएगा, वह युद्ध को काटेगा। और एक व्यक्ति जो नशीले पदार्थ बोता है वह नशे की लत को काटेगा।

रोमियो 1:18-27 सिखाते हैं कि नास्तिक जीवन होना हमें नैतिक भ्रष्टाचार और अनेक प्रकार की दुष्टता की ओर ले जाता है। अनेक अवसरों पर किसी मनुष्य के पापों के परिणाम उस के इसी पृथ्वी के जीवन के दौरान ही उस तक पहुँच जाते है। दुख उठाना तो शायद उसके बुरे निर्णयो या क्रिया-कलापों का सामान्य परिणाम होता है।

परमेश्वर क्यों कुछ ऐसे न्याय वर्तमान काल में ही ले आता है?

पढ़े यहेजेकेल 14:21 और (लैव्यवस्था 26:14-25; आमोस 4:6-12; हगै 1:3-11; मत्ती 24:4-14; प्रकाशितवाक्य 9:20-21, 16:9)

नोट्सः परमेश्वर पूरे संसार पर राज्य करता है। वह सभी प्राकृतिक शक्तियों और मानव इतिहास की घटनाओं पर नियन्त्रण रखता है। ऐसे समय जब मनुष्य जीवित परमेश्वर की आज्ञा को नहीं मानता है या जब लोग परमेश्वर की ओर से मुख फेर लेते हैं तब परमेश्वर अपनी सुरक्षा को उन पर से हटा लेता है और अस्थाई न्याय को प्रकट करता है। उदाहरण के लिए उनके खेत की कटाई सफल नहीं होती है, लड़ाईयाँ उनके घरों को नष्ट कर देती हैं। और लोग भारी नुकसान उठाते हैं। और तब उनको जीवन में कहीं भी संतोष नज़र नहीं आता है। परमेश्वर अनेक प्राकृतिक विनाश के तरीके प्रयोग में ले आता है। जैसे, भूचाल, बाढ़, सूखा, भूख और महामारियाँ। ऐसा इस पृथ्वी पर इतिहास में हर युग में देखा गया है। जब भी परमेश्वर मनुष्य के कामों और पापों के कारण खुश नहीं होता है वह ऐसा ही करता है जिससे मनुष्य पश्चाताप् करे और उसकी ओर फिर जाए।

परमेश्वर के लोगों के प्रति अस्थाई न्याय प्रकट करने का वास्तिवक कारण क्या है?

पढ़ेः 1 कुर.11:32 और इब्रानियों 12:4-11

नोट्सः परमेश्वर अस्थाई न्याय इसलिए करता है कि लोग अपने भविष्य के अनन्तकाल के कष्टों से सुरक्षित रहें। इस

चेतावनी देना चाहता है और लोगों पर उन्के पाप प्रकट करके से उन को डाँट तक उन से छुटकारा दे सके। परमेश्वर का एक ही लक्ष्य है कि वह लोगों के लिए सबसे उत्तम कर सके। लोगों को अनुमति देना कि वे पाप करते रहें अन्त में उनको पाप का गुलाम बना देगी। और साथ ही उन्हे उस सज़ा तक पहुँचा देगी जो परमेश्वर उनको खुल्लमखुल्ला देगा। वर्तमान में अस्थाई न्याय करके सज़ा देने का अर्थ है कि परमेश्वर कारण दे रहे हैं लोगों को कि वे अपने पापों और बुराई से फिर जाएँ और उसके स्थान पर परमेश्वर की पवित्रता और धार्मिक्ता में जीवन बिताएँ।

2.परमेश्वर का भविष्य में अनन्तकाल का न्याय

जब आप धर्मी और अधर्मी लोगों की जीवन शैली को देखते हैं तब आप क्यों जीवन को न्यायपूर्ण और अन्यायी कहते हैं?

पढ़ेः सभोपदेशक 12:14 और भजन 73:2-16

शिक्षा देः जीवन तो अन्याय से भरा है। भले लोग दुख उठाते हैं जो लोग निस्वार्थ होते हैं उन्ही को शोषित किया जाता है। नम्र और दीन लोगों को डराया जाता है, और गरीब लोगों को लूटा जाता है। दूसरी ओर दुष्ट लोग फलते-फूलते हैं, स्वार्थी लोग बहुत सा धन कमाते हैं, क्रूर लोग दीन लोगों का सब कुछ छीन लेते हैं। अमीर लोग गरीबों को और अधिक गरीब बना देते हैं। अत्याचारी लोग आराम से अपने बिस्तर पर मर जाते हैं जबकि धर्मी लोगों को सता सता कर मारा जाता है। अब जैसा कि हम सोचते हैं कि एक परमेश्वर है जो सर्व सामर्थी और भला है, तो फिर वह संसार में इतना सब अन्याय होते रहने की अनुमति कैसे देता है? अगर वह इस सारे संसार में होने वाले अन्याय के विषय मे कुछ भी नहीं करेगा, अभी या फिर इस जीवन के बाद भी, जिससे वह उस सारे अन्याय के विरुद्ध या फिर छुटपुट बुराई के विरुद्ध कुछ नहीं करता है तो वह सर्वशक्तिमान नहीं है, इसी लिए वह कुछ भी नहीं कर पा रहा है या फिर वह इतना भला नहीं है कि उसे किसी भी बात की परवाह हो!!

फिर भी बाइबल हमें स्पष्ट रूप से सिखाती है कि जीवित परमेश्वर तो सर्वसामर्थी, भला और न्यायी है। और उसका न्याय तो ब्रह्माण्ड के स्तर पर होगा। लोग इस पृथ्वी पर चाहे किसी भी युग में जीवित रहे हों, उस अन्तिम निर्णय के समय में सभी उपस्थिति होंगे।

भविष्य में परमेश्वर का न्याय कैसा होगा?

पढ़ेः इब्रानियों 9:27 (मत्ती 25:31-33)

शिक्षा देः बाइबल सिखाती है कि शरीर के पिंड की शारीरिक मृत्यु अन्त नहीं है, क्योंकि मनुष्य के लिए इससे भी अधिक गम्भीर और महान दुख आने वाला है। यीशु मसीह इस धरती पर वापस आएँगे और तब इस धरती पर जितने भी मनुष्य जीवित रहे थे उन सब का न्याय होगा। वह हर कर्म और हर छुपी हुई बात का जो लोगों में पाई जाती हैं उनको प्रकट करके उनका न्याय करेगा। (सभोपदेशक 12:14) वह अपने राज्य में दुष्ट कर्म करने वालों को और जो पाप को उत्पन्न करते हैं उनको चुन-चुन कर बाहर निकालेगा। (मत्ती 13:41) वह उनको अलग कर देगा जो जो यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं और उसे अपना उद्धारक्रता मानते हैंउस पर विश्वास नहीं करते हैं और फिर यीशु मसीह के साथ उसी सम्बन्ध के अनुसार उनका न्याय करेगा। (मत्ती 25:12) वे लोग जो यीशु मसीह पर विश्वास नहीं करते हैं और जो उसे अपना उद्धारकर्ता नहीं मानते हैं, प्रभु उनका न्याय परमेश्वर के नियमों के ज्ञान के अनुसार करेगा। (रोमियो 2:10-16) इनके अविश्वास के अनुसार (युहन्ना 3:18-21,36) उनकी कमियों के अनुसार (मत्ती 25:41-46) उनके बुरा कर्मों के अनुसार (प्रकाशितवाक्य 21:8) उनके यीशु को कदमों तले कुचलने और अनुग्रह की आत्मा का अपमान करने के अनुसार (इब्रा.10:26-31) जो कोई भी यीशु मसीह के सुसमाचार का तिरस्कार करता है वह उसकी आज्ञा न मानने के कारण सज़ा पाएगा। (2 थिसु. 1:8)

फिर भी परमेश्वर तो हर मनुष्य का सम्पूर्ण रीति से न्याय करेगा। (लूका 12:47-48) वह सताए हुए लोगों का न्याय करेगा और गरीब दुखी लोगों पर दया दिखाएगा। (मत्ती 5:3-12) लेकिन वह धनी और लालची लोगों को खाली हाथ

भेज देगा। (याकूब 5:1-6) और वह सभी दुष्ट लोगों को नष्ट कर देगा। वह इस पूरे संसार का न्याय करेगा और हर जीवित व्यक्ति को उसकी दुष्टता के कारण जो उसने परमेश्वर की पृथ्वी पर की है नष्ट कर देगा। वह लोगों में हर तरह के घमण्ड और अक्खड़पन का अन्त अनन्त तबाही का स्थान (लेकिन वहाँ पर अनन्त विनाश नहीं होता है) उसे आग की जलती झील कहते हैं जहाँ पर गंधक की आग जलती रहती है। नरक उस आग यंत्रणा का स्थान है। (लूका16: 23-26) यह वह स्थान है जहाँ जलते तो हैं पर नाश नहीं होते हैं। यहाँ पर रोने, दर्दनाक पीड़ा और अत्यन्त उत्तेजित क्रोध करने का कोई अन्त नहीं होता है। (मरकुस 9:42-49) यह एक ऐसा स्थान है जहाँ से कोई बाहर नही निकल सकता है। (लूका 16:26) अधर्मी लोगों को अनन्तकाल के विनाश की सज़ा मिलेगी। और वे परमेश्वर की उपस्थिति, प्रेम और देखभाल से दूर बन्द कर दिए जाएँगे। (2 थिसु.1:8-9) हर वह व्यक्त जिसका नाम जीवन की पुस्तक में नहीं पाया जाएगा उसे इस आग की झील में फेंक दिया जाएगा। (प्रकाशितवाक्य 20:15)

मसीही लोगों को तिरस्कृत करके अनन्त काल की सज़ा नहीं दी जाएगी। (युहन्ना 5:24,29) पर उनका न्याय भी होगा पर इस बात पर कि उन्होंने अपना मसीही जीवन इस पृथ्वी पर कैसे बिताया था। (2 कुर.5:10; 1 कुर. 3:10-15)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***प्रतिक्रियाएँ*** **परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में की गई प्रार्थनाएँ**

बारी-बारी करेः प्रार्थना दलों में जो भी वचन आपने सीखा है उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से बारी बारी छोटी-छोटी प्रार्थनाएं करें।

या पूरे दल को छोटे-छोटे दलों में बाँट कर जो भी आपने सीखा है उसके प्रतिउत्तर में प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***निर्धारित कार्य*** **अगले पाठ के लिए**

दल के अगुवेः अपने दल के सदस्यों को तैयारी के लिए घर का काम लिखित रूप से दें।

1.<u>समर्पणः</u> स्वयं को समर्पित करें कि आप लोगों को सुसमाचार स्पष्ट रूप से समझाएँगे।

2.<u>परमेश्वर के साथ निजि समय बिताना:</u> मत्ती के आधे अध्याय से (मत्ती 11:25-14:36) तक हर दिन परमेश्वर के साथ समय बिताएँ।

3.<u>बाइबल अध्ययनः</u> घर पर अगला दूसरा बाइबल अध्ययनशुरू करें। (उत्पत्ति 1:1–2:4अ) जिसका शीर्षक होगा, “मैं कहाँ से आया हूँ?” इसके लिए 5 कदम के तरीके का इस्तेमाल करें। अपने नोट्स बनाएँ।

4.<u>प्रार्थनाः</u> इस हफते किसी विशेष बात या चीज़ के लिए प्रार्थना करें। और देखे कि परमेश्वर क्या कर रहे हैं। (भजन 5:3)

5.<u>अपनी नोटबुक के नोट्स पूरे करेः</u> आपने कितने चेले बनाए, इसमें आपकी आराधना के नोट्स, अपने परमेश्वर के साथ बिताए निजि समय के नोट्स, जो शिक्षा पाई उसके नोट्स और तैयारी के नोट्स पूरे करने हैं।